موضوع الخطبة : من حقوق المصطفى : محبته

الخطيب: فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अधिकार

आप से प्रेम करना भी है।

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا

समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं ,हम उसकी ही प्रशंसा करते हैं एवं उससे ही सहायता मांगते हैं,हम उससे अपने पापों की क्षमा चाहते हैं तथा उसके समक्ष तौबा करते हैं, हम अपने जान (आत्मा) की बुराईयों एवं अपने कर्मों की बुराईयों से अल्लाह की शरण चाहते हैं, जिसको अल्लाह हिदायत दे दे उसको

कोई गुमराह (पथभ्रष्ट)नहीं कर सकता एवं जिसको दिग्भ्रमित कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद(उपास्य, पुज्य) नहीं,
वह अकेला है उसका कोई साझी भी नहीं,
और मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उसके बंदे और रसूल(दास एवं संदेशवाहक) हैं

इन समस्त प्रशंसाओं के पश्चात :

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह कि बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदतए)(नवाचार) है और हर बिदअत (नवोन्मेष) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है.

ए मुसलमानो!

अल्लाह से डरो और उसका भय सदैव अपने हृदय में जीवित रखो उसकी आज्ञाकारीता करो और उसकी अवज्ञा से बचते रहो यह जान लो कि पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से प्रेम और उनका आदर एक मुसलमान के ईमान की शर्त है.और धर्म का एक महत्वपूर्ण सुतून है.ऐसे अनेकों साक्ष्य हैं जो यह दर्शाते हैं कि पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम करना वाजिब (अनिवार्य) है. उदाहरण स्वरूप अल्लाह ताला का यह कथन है:

قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوها وتجارةتخشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَـٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَاد فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَـٰسِقِينَ.

अर्थात: "**कह दो कि अगर तुम्हारे पिता और पुत्र और भाई और स्त्रियाँ और वंश के लोग और धन जो तुम कमाते हो और कारोबार जिसके बंद होने से डरते हो और मकानें हैं जिनको तुम पसंद करते हो अल्लाह और उसके पैग़म्बर से और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने से तुम्हें अधिक प्रिय हो तो इंतज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना आदेश (यातना) भेजे. और अल्लाह पाप करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता.**"

यह आयत (स्पष्ट)साक्ष्य है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम से प्रेम वाजिब (अनिवार्य) है. तथा आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम इस प्रेम के पात्र हैं. और यही आयत मोमिनो को आपसे प्रेम के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी काफ़ी है. क्योंकि अल्लाह ने उस व्यक्ति को जिस का धन-दौलत, परिवार, उसके निकट अल्लाह और रसूल से अधिक प्रेमी हों उसे यह चेतावनी दी है कि: {इंतज़ार करो यहां तक की अल्लाह अपना आदेश (यातना) भेजे.} तथा इस आयत के अंत में उसे "फ़ासिक़" कहा है और यह बताया है कि वह भर्मितों में से है और यह हिदायत से वंचित है.

ए मोमिनो! पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम उसी समय पूरा हो सकता है जब आप से प्रेम को अपने प्राण, धन, एवं परिवार पर प्राथमिकता दी

जाए. इसके बिना प्रेम और ईमान अधूरे रह जाते हैं इसका साक्ष्य क़ुरआन व हदीस से अंकित है. अल्लाह का कथन है:

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ. (الأحزاب: 06)

अर्थात: "**पैग़म्बर मोमिनो पर उनकी प्राणों से भी अधिक अधिकार रखते हैं**." (**इस हदीस को बुख़ारी (२३९९) एवं मुस्लिम(१६९१) ने अबू हुरैरा से वर्णन किया है एवं उपर्युक्त शब्द बुख़ारी में अंकित है**.)

हदीस में इसका साक्ष्य आया है, **जिसको पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने यूं फ़रमाया**:

عن أبي هريرة: ما مِن مُؤْمِنٍ إلّا وأنا أوْلى النّاسِ به في الدُّنْيا والآخِرَةِ، اقْرَؤُوا إنْ شِئْتُمْ: {النبيُّ أوْلى بالمُؤْمِنِينَ مِن أنْفُسِهِمْ}[الأحزاب:06] (البخاري:4781)

अर्थात: "**विश्व में कोई मोमिन ऐसा नहीं जिससे मेरा दुनिया व आख़िरत में सबसे अधिक निकट संबंध न हो**, **यदि तुम चाहते हो तो यह आयत पढ़ लो**: **पैग़म्बर मोमिनो से उनके प्राणों से अधिक निकट संबंध रखते हैं**."

आप सल्लल्लाहु अलैहि का कथन है:

أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ.(مسلم :867)

अर्थात: " मैं प्रत्येक मोमिन से स्वयं उससे अधिक प्रेम एवं अनुराग रखता हूं" (इस हदीस को मुस्लिम (८६७) ने जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है.)

पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ، وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. (البخاري:15)

अर्थात: " तुम में से कोई मोमिन में नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके अपने संतानों उसके माता पिता और तमाम लोगों से अधिक उसके निकट प्रिय ना हो जाऊं.(इस हदीस को बुख़ारी(१५) एवं मुस्लिम(४४) मैं अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है.)

"عن عَبْدِ اللَّهِ بْنَ هِشَامٍ ، قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا مِنْ نَفْسِي. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " لَا، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ ". فَقَالَ لَهُ عُمَرُ : فَإِنَّهُ الْآنَ، وَاللَّهِ لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " الْآنَ يَا عُمَرُ ".(البخاري 6632)

अर्थात: "बुख़ारी ने अब्दुल्लाह बिन हेशाम रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, उल्लेख किया है कि हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के साथ थे और ऊ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़े हुए थे उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उल्लेख किया: या रसूलुल्लाह! आप मुझे हर चीज़ से अधिक प्रिय हैं सिवाय मेरे प्राण के, पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरा प्राण है, ईमान उस समय तक पूरा नहीं

हो सकता जब तक कि मैं तुम्हारे निकट तुम्हारे अपने प्राण से भी अधिक प्रिय ना हो जाऊं. उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: तब अल्लाह की क़सम! अब आप मुझे मेरे अपने प्राण से भी अधिक प्रिय हैं. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हां, उमर! अब तुम्हारा ईमान पूरा हुआ." (4) **(इस हदीस को बुख़ारी (६६३२) ने रेवायत किया है.)**

عَنْ أَنَسٍ ، عَنِ النَّبِيِّ صَـلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَـلَّمَ، قَالَ : " ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ حَلَاوَةَ الْإِيمَانِ : أَنْ يَكُونَ اللَّهُ وَرَسُـولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِـوَاهُمَا، وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلَّهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ. (البخاري:16)

अर्थात: "अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

तीन चीज़ें जिसके अंदर होंगी उसको ईमान की मिठास मिल जाएगी:

१. जिस के निकट अल्लाह और उसके रसूल सबसे अधिक प्रिय हों.

२. जो मनुष्य किसी से सिर्फ़ अल्लाह के लिए प्रेम करे.

३. जो कुफ़्र से निजात पाने के पश्चात दोबारा कुफ़्र की तरफ़ लौटने को उसी प्रकार ना पसंद करे जिस प्रकार आग में गिरना ना पसंद करता है."(इसे बुख़ारी (१६) एवं मुस्लिम (४३) ने रिवायत किया है, एवं उपर्युक्त शब्द मुस्लिम के हैं.)

ए मोमिनो! अल्लाह से प्रेम के साथ रसूल से प्रेम का उल्लेख क़ुरआन और ह़दीस में अनेक स्थानों पर आया है. जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(التوبة :24) أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ .

अर्थात: "यदि यह तुम्हें अल्लाह से उसके रसूल से अधिक प्रिय है."

यह रब्त (संबंध) इस बात का साक्ष्य है कि अल्लाह और रसूलुल्लाह के प्रेम के मध्य अधिक अटूट संबंध पाया जाता है, हर स्थिति में मूल रुपेन अल्लाह के प्रेम में रसूल का प्रेम शामिल है, लेकिन रसूल के प्रेम को अलग से उल्लेख करके यह संकेत दिया गया है कि रसूल से प्रेम का बड़ा महत्व है आप अल्लाह और रसूल के प्रेम के इस अटूट संबंध को समझें.

ए मुसलमानो! पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम का बहुत महत्व है,एक महत्व यह भी है कि जो व्यक्ति आपसे प्रेम करता है उसे आख़िरत में आपका संगत प्राप्त होगा.

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ، فَقَالَ : مَتَى السَّاعَةُ ؟ قَالَ : " وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا ؟ " قَالَ : لَا شَيْءَ، إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ : " أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ ". قَالَ أَنَسٌ : فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرَحَنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ ". قَالَ أَنَسٌ : فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبَا بَكْرٍ، وَعُمَرَ، وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ. (البخاري3688)

अर्थात: "अनस बिन (पुत्र) मालिक रज़ि अल्लाहु अंहु से मर्वी है: एक व्यक्ति ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: क़यामत कब आएगी? आपने फ़रमाया: तुमने उसके लिए क्या तैयारी की है? उसने कहा: कुछ भी नहीं, मात्र यह कि मैं अल्लाह और रसूल से प्रेम करता हूं, आपने फ़रमाया: तू क़यामत के दिन उसी के साथ होगा जिससे तू प्रेम करता है. अनस रज़ि अल्लाहु अंहु का कथन है कि हम किसी बात से इतना खुश ना हुए जितना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन "जिसको प्रेम करता है क़यामत के दिन उसी के साथ होगा"से हुए, अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, ह़ज़रत अबू बक्र और ह़ज़रत उ़मर रज़ि अल्लाहु अनहुमा से प्रेम करता हूं,मुझे आशा है कि इस प्रेम के कारण मैं उनके साथ रहूंगा. यद्यापि मैंने उन के जैसे कार्य नहीं किये."(6) (इसे बुख़ारी (३६८८) एवं मुस्लिम (२६३९) ने रिवायत किया है.)

अल्लाह तअाला मुझे और आपको कुरआन की बरकत से मालामाल कर दे! मुझे और आपको भी उसकी आयतों और ह़िकमत (बुद्धिमत्ता / नीति) पर आधारित नसीह़त से लाभ पहुंचाए. मैं यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सबके लिए हर गुनाह (पाप) से अल्लाह की मगफ़िरत (क्षमा) चाहता करता हूं, आप भी अल्लाह से अपने पापों की क्षमा चाहें, नि: संदेह वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और बड़ा माफ़ करने वाला है.

द्वितीय उपदेश :

.الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى

أما بعد!

ए मोमिनो! प्रिय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करने के अनेक सहायक कारण हैं, उनमें से चार कारणों का उल्लेख यहां पर किया जाता है:

१. उम्मत के प्रति रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलिदानों और आपके अनुराग एवं कोमलता को याद करना, क्योंकि आपने इस्लाम के प्रचार-प्रसार के मार्ग में कठिनाइयों का सामना किया है.

२. रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम के भाव को शक्ति प्रदान करने वाले कारणों में से एक कारण यह भी है: यह याद रखा जाए कि उम्मत के उस दुनिया(आख़ेरत) में बर्बादी(हानि)के प्रति भी आप अत्यंत चिंतित थे जैसा कि अल्लाह का कथन है:

لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُـــولٌ مِّنۡ أَنفُسِـــكُمۡ عَزِيزٌ عَلَيۡـهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيصٌ عَلَيۡكُم بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ. (التوبة:128)

अर्थात: " तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आए हैं जो तुम्हारे लिंग से हैं, जिनको तुम्हारे हानि से अति कष्ट होता है, और तुम्हारे लाभ के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं,ईमान वालों (विश्वासियों) के साथ बड़े दयालु हैं."

عَن أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِـيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّهُ سَـمِعَ رَسُـولَ اللَّهِ صَـلَّـى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَـلَّمَ يَقُولُ : " إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّـارِ يَقَعْنَ فِيهَـا، فَجَعَلَ يَنْزِعُهُنَّ وَيَغْلِبْنَـهُ فَيَقْتَحِمْنَ فِيهَـا، فَـأَنَـا آخُذُ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّـارِ، وَهُمْ يَقْتَحِمُونَ فِيهَا ". (البخاري6483)

अर्थात: "हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: मेरे और लोगों का उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति जैसा है जिस ने आग जलाई, जब उसके चारो ओर रौशनी हो गई तो कीड़े-मकोड़े उसमें गिरने लगे और आग जलाने वाला उन्हें उसमें से निकालने लगा, किंतु वे उसके नियंत्रण में नहीं आए, और आग में गिरते रहे,इसी प्रकार मैं तुम्हारी कमर को पकड़ कर आग से निकालता हूँ, और तुम हो कि उसी में गिरते जा रहे हो. (इस हदीस को इमाम बुख़ारी (६४८३) एवं इमाम मुस्लिम (२२८४) ने रिवायत किया है.)

३. रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अति शक्ति प्रदान करने वाला तृतीय कारण यह है कि आप के गुणों एवं शिष्टाचारों से अवगत हुआ जाए, उनके गुणों में से यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को माफ़ किया करते थे, मक्का वालों ने आपको जादूगर, दीवाना और भर्मित व्यक्ति कहा, आपके घुटनों पर मारा, ऊंट के ओझ से आपका गर्दन दबाया, आप के चौथे दांत शहीद (तोड़) कर दिए एवं आप के पवित्र चेहरे से रक्त बह पड़े, किंतु जब अल्लाह ने आपको मक्का वासियों पर प्रभुत्व प्रदान किया तो आपने मक्का वासियों के समस्त अत्याचारों एवं उत्पीड़नों के बावजूद उनसे कहा: ए मक्का वासियो तुम्हें

क्या लगता है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा? उन लोगों ने कहा: हमें तो आपसे भलाई की आशा है क्योंकि आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ भाई के पुत्र हैं, तो आपने फ़रमाया: जाओ तुम सब स्वतंत्र हो!

इस प्रकार आपने सब को स्वतंत्रता प्रदान किया जबकि अल्लाह ने आपको उन पर प्रभुत्व प्रदान किया था और उनके हत्या करने पर नियंत्रण दिया था और वे सब आपके लिए माल-ए-फ़ैय (वह माल जो विपक्षी दलों से युद्ध लड़े बिना प्राप्त हो) के रूप में थे इसीलिए तो मक्का वासियों को "तुलक़ा" (स्वतंत्र) का नाम दिया जाता है.(इसे इमाम त़बरानी मैं अपनी तारीख़ में रिवायत किया है एवं फ़तह-ए-मक्का की ख़बर नक़ल की है. देखें: अज़रक़ी की अख़बार-ए- मक्का (२/१२१).

४. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अति शक्ति प्रदान करने वाला अंतिम कारण यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवनी पर आधारित पुस्तकों को बार-बार पढ़ी जाए और उनका अध्ययन किया जाए और आपके जीवन शैली एवं दिनचर्या के कार्यों को याद किया जाए, आपके जिहाद एवं इस्लामी समाज के निर्माण में आपके चेष्टाओं को याद किया जाए.

ए मुसलमानो! रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अपना धन-मन एवं परिवार पर प्राथमिकता देने के विषय में हमारे पूर्वजों ने उल्लेखनीय उदाहरण स्थापित की हैं. अबू सुफ़ियान बिन (पुत्र) ह़रब - जिस समय वह बहुदेववादी थे- ने ज़ैद बिन (पुत्र) दसना रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा, जिस समय उनको मक्का वालों ने हत्या करने के लिए हरम से निकाला: ज़ैद तुमको अल्लाह का वास्ता

देकर पूछता हूं: क्या तुम्हें यह बात पसंद है कि इस समय तुम्हारे स्थान पर मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हों और हम उनकी हत्या कर दें और तुम अपने परिवार के साथ (सुरक्षित) रहो?

उन्होंने उत्तर दिया: अल्लाह की क़सम! मैं यह कभी नहीं पसंद करूंगा कि मेरे स्थान पर मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हों और उन्हें कोई कांटा भी चूभे जिससे उनको कष्ट हो और मैं अपने परिवार वालों के साथ बैठा रहूं.

अबू सुफ़ियान ने कहा: मैंने कभी किसी को इतना प्रेम करते नहीं देखा जितना मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा (साथी गण) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करते हैं. (देखें: इब्न-ए-हिशाम की अ-स्सीरतु-न्नबवी, इन्होंने योमुर्रजी सं०: ३ हिजरी के वर्णन में इसका उल्लेख किया है और इसका संबंध इसहाक़ से बताया है.)

ए मोमिनो! शैत़ान कुछ लोगों को इस प्रकार भी अपने जाल में फ़ंसाता है कि वह उनके समक्ष ऐसे कार्यों को सुंदर रूप से प्रस्तुत करता है जो धर्म का भाग ही नहीं हो, नाही रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हें किया हो और ना ही सहाबा और तीनों क़रणों (वंश) ने ऐसा कुछ किया हो, साथ ही शैत़ान उन्हें झूठे भ्रम में भी डाल देता हो कि ऐसा करना रसूल सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम से प्रेम करना है इसका उदाहरण वह कार्य भी है जिसे "ईद मिलदुन्नबी" कहा जाता है, जो कि ग़लत है इसलिए कि प्रेम का मतलब है प्रेमि का आज्ञा मानना ,उसकी समस्त बातों को मानना और उसके धर्म में कटौती-बढ़ोती ना करना. हम यह जानते हैं कि "ईद मिलादुन्नबी" प्रेम का भाग नहीं है बल्कि इ़बादत के नाम पर धर्म में एक नव-अविष्कार है, और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ فِيهِ فَهُوَ رَدٌّ. (البخاري2697)

अर्थात: "जिस व्यक्ति ने हमारे इस धर्म में किसी ऐसी नयी चीज़ का आविष्कार किया जो इस धर्म का भाग नहीं है तो वह बहिष्कृत माना जाएगा. (इसे बुख़ारी (२६९७) एवं मुस्लिम (१७१८) ने आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हां से रिवायत किया है.)

अर्थात वह अ़मल (कार्य) कर्ता की ओर लौटा दिया जाता है और स्वीकार नहीं किया जाता.

आप यह याद रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा बनाए रखे- अल्लाह ने आपको बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.(الأحزاب56)

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके(फरिश्ते) देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो."
पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपनी उम्मती (अनुयायियों) को शुक्रवार को अपने उपर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजने पर प्रोत्साहित करते हुए फ़रमाया: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से एक शुक्रवार का दिन है इसलिए

उस दिन मेरे ऊपर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजो, क्योंकि तुम्हारा दुरुद व सलाम मेरे ऊपर प्रस्तुत किया जाता है."

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप

से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं.

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

ए अल्लाह के बंदो (दासो)!

नि: संदेह अल्लाह तआला न्याय का, अच्छाई का, और परिजनों के साथ उत्तम व्यवहार करने का आदेश देता है, और असभ्यता के कार्यों, अशिष्ट गतिविधियों एवं क्रुरता व दुरुपयोग से रोकता है. वह स्वयं तुम्हें परामर्श देता है कि तुम नसीहत प्राप्त करो इसलिए तुम अल्लाह का ज़िक्र(याद) करो वह तुम्हें याद करेगा उसकी नेमतों पर उसके आभारी रहो वह तुम्हें अधिक नेमतें (आशीर्वाद) देगा, अल्लाह को याद करना बहुत बड़ी बात है तुम जो भी करते हो वह तुम्हारे समस्त गतिविधियों से अवगत है.

लेखक: माजिद बिन सुलेमान अस्सानी

२० रबीउल अव्वल सन् १४४२ हिजरी

जूबैल,सऊदी अरब।